हफ़्तावार रिसाला : 179
Weekly Booklet : 179

Saabir Boodha (Hindi)

साबिर बूढ़ा

सफ़हात 20

साबिरो शाकिर बूढ़ा 01
सब्र की अक़्साम और हुक्म 09
एक कांटे पर सब्र का अज्र 14
मौत की दुआ करना कैसा ? 18

जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत मौलाना उ़बैद रज़ा अ़त्तारी मदनी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَة ने येह बयान 15 जुमादल ऊला 1442 ब मुताबिक़ 31 दिसम्बर 2020 को दा'वते इस्लामी के आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**साबिर बूढ़ा**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

साबिर बूढ़ा

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला "साबिर बूढ़ा" पढ़ या सुन ले उसे मुसीबतों पर सब्र करने का ह़ौसला अ़त़ा फ़रमा, उस को पुल सिरात़ से सलामती के साथ गुज़ार और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने येह कहा : "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" उस के लिये मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो गई।

(مُعجَم کبیر، ج۵ص۲۵ حدیث ۴۴۸۰)

फ़रमाएंगे जिस वक़्त ग़ुलामों की शफ़ाअ़त — मैं भी हूं ग़ुलाम आप का मुझ को न भुलाना
फ़रमा के शफ़ाअ़त मेरी ऐ शाफ़ेए़ महशर ! — दोज़ख़ से बचा कर मुझे जन्नत में बसाना

(वसाइले बख़्शिश, स. 354)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

साबिरो शाकिर बूढ़ा

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू अ़म्र अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़म्र औज़ाई़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे एक बुज़ुर्ग ने येह वाक़िआ़ सुनाया कि मैं औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰه की तलाश में सह़राओं, पहाड़ों और जंगलों में फिरता ताकि उन की सोह़बत से फ़ैज़याब हो सकूं। एक मरतबा मैं इसी मक़्सद के लिये मिस्र गया, जब मैं मिस्र के क़रीब पहुंचा

तो वीरान सी जगह में एक ख़ैमा (Camp) देखा, जिस में एक ऐसा शख़्स था जिस के हाथ, पाउं और आंखें (जुज़ाम की वज्ह से) ज़ाएअ़ हो चुकी थीं लेकिन इस ह़ालत में भी वोह **अल्लाह** पाक का नेक बन्दा इन अल्फ़ाज़ के साथ अपने रब की ह़म्दो सना कर रहा था : ऐ मेरे पाक परवर्दगार ! मैं तेरी वोह ता'रीफ़ करता हूं जो तेरी तमाम मख़्लूक़ की ता'रीफ़ के बराबर हो। ऐ मेरे पाक परवर्दगार ! बेशक तू तमाम मख़्लूक़ का ख़ालिक़ (या'नी पैदा करने वाला) है और तू सब पर फ़ज़ीलत रखता है, मैं इस इन्आ़म पर तेरी ह़म्द (या'नी ता'रीफ़) करता हूं कि तू ने मुझे अपनी मख़्लूक़ में कई लोगों से अफ़्ज़ल बनाया।

वोह बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि जब मैं ने उस शख़्स की येह ह़ालत देखी तो मैं ने कहा : ख़ुदा पाक की क़सम ! मैं इस शख़्स से येह ज़रूर पूछूंगा कि क्या ह़म्द (या'नी **अल्लाह** पाक की ता'रीफ़) के येह मुबारक अल्फ़ाज़ तुम्हें सिखाए गए हैं या **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से तुम्हारे दिल में डाले गए हैं ? चुनान्चे इसी इरादे से मैं उस के पास गया और उसे सलाम किया, उस ने मेरे सलाम का जवाब दिया। मैं ने कहा : ऐ नेक बन्दे ! मैं तुम से एक चीज़ के मुतअ़ल्लिक़ सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम मुझे जवाब दोगे ? वोह कहने लगा : अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَاللهُ ज़रूर जवाब दूंगा। मैं ने कहा : वोह कौन सी ने'मत है जिस पर तुम **अल्लाह** पाक की ह़म्द कर रहे हो और वोह कौन सी फ़ज़ीलत है जिस पर तुम शुक्र अदा कर रहे हो ? (ह़ालां कि तुम्हारे हाथ, पाउं और आंखें वग़ैरा सब ज़ाएअ़ हो चुकी हैं।)

वोह शख़्स कहने लगा : क्या तू देखता नहीं कि मेरे रब ने मेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? मैं ने कहा : क्यूं नहीं, मैं सब देख चुका

हूं। फिर वोह कहने लगा : देखो ! अगर **अल्लाह** पाक चाहता तो मुझ पर आस्मान से आग बरसा देता जो मुझे जला कर राख बना देती, अगर वोह चाहता तो पहाड़ों को हुक्म देता और वोह मुझे तबाहो बरबाद कर डालते, अगर **अल्लाह** पाक चाहता तो समुन्दर को हुक्म फ़रमाता जो मुझे ग़र्क़ कर देता या फिर ज़मीन को हुक्म फ़रमाता तो वोह मुझे अपने अन्दर धंसा देती लेकिन देखो, **अल्लाह** पाक ने मुझे इन तमाम मुसीबतों से महफ़ूज़ रखा फिर मैं अपने रब्बे करीम का शुक्र क्यूं न अदा करूं, उस की हम्द क्यूं न करूं और उस पाक परवर्दगार से महब्बत क्यूं न करूं ? फिर मुझ से कहने लगा : मुझे तुम से एक काम है, अगर कर दोगे तो तुम्हारा एहसान होगा, चुनान्चे वोह कहने लगा : मेरा एक बेटा है जो नमाज़ के अवक़ात में आता है और मेरी ज़रूरिय्यात पूरी करता है और इसी तरह इफ़्तारी के वक़्त भी आता है लेकिन कल से वोह मेरे पास नहीं आया, अगर तुम उस के बारे में मा'लूमात फ़राहम कर दो तो तुम्हारा एहसान होगा। मैं ने कहा : मैं तुम्हारे बेटे को ज़रूर तलाश करूंगा और फिर मैं येह सोचते हुए वहां से चल पड़ा कि अगर मैं ने उस नेक बन्दे की ज़रूरत पूरी कर दी तो शायद इसी नेकी की वज्ह से मेरी मग़्फ़िरत हो जाए।

चुनान्चे मैं उस के बेटे की तलाश में एक तरफ़ चल दिया, चलते चलते जब रेत के दो टीलों के दरमियान पहुंचा तो वहां का मन्ज़र देख कर मैं अचानक रुक गया। मैं ने देखा कि एक दरिन्दा एक लड़के को चीर फाड़ कर उस का गोश्त खा रहा है, मैं समझ गया कि येह उसी शख़्स का बेटा है, मुझे उस लड़के के फ़ौत होने पर बहुत अफ़्सोस हुवा और मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ कहा और वापस उसी शख़्स की तरफ़ येह सोचते हुए चल पड़ा कि अगर मैं ने उस परेशान हाल शख़्स को उस के बेटे की मौत

की ख़बर फ़ौरन ही सुना दी तो सुन कर कहीं वोह भी फ़ौत न हो जाए, आख़िर किस त़रह़ येह ग़मनाक ख़बर सुनाऊं कि उसे सब्र नसीब हो जाए चुनान्चे मैं उस के पास पहुंचा और उसे सलाम किया। उस ने जवाब दिया, फिर मैं ने उस से पूछा : मैं तुम से एक सुवाल करना चाहता हूं क्या तुम जवाब दोगे ? येह सुन कर वोह कहने लगा कि अगर मुझे मा'लूम हुवा तो اِنْ شَآءَاللّٰه ज़रूर जवाब दूंगा। मैं ने कहा : तुम येह बताओ कि **अल्लाह** पाक के हां ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का मक़ामो मर्तबा ज़ियादा है या आप का ? येह सुन कर वोह कहने लगा : यक़ीनन ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का मर्तबा व मक़ाम ही ज़ियादा है। फिर मैं ने कहा : जब आप عَلَيْهِ السَّلَام को मुसीबतें पहुंचीं तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन बड़ी बड़ी मुसीबतों पर सब्र किया या नहीं ? वोह कहने लगा : ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام ने कमा ह़क़्क़ुहू (या'नी जैसा ह़क़ था वैसा) मुसीबतों पर सब्र किया। येह सुन कर मैं ने उन से कहा : फिर तुम भी सब्र से काम लो, सुनो ! अपने जिस बेटे का तुम ने ज़िक्र किया था उस को दरिन्दा खा गया है। येह सुन कर उस शख़्स ने कहा : **अल्लाह** पाक के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं जिस ने मेरे दिल में दुन्या की ह़सरत डाली। फिर वोह शख़्स रोने लगा और रोते रोते उस ने जान दे दी। मैं ने اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ कहा और सोचने लगा कि मैं इस जंगल में अकेले इस के कफ़न दफ़्न का कैसे इन्तिज़ाम करूंगा, अभी मैं येह सोच ही रहा था कि अचानक मुझे दस बारह सुवारों का एक क़ाफ़िला नज़र आया। मैं ने उन्हें इशारे से अपनी त़रफ़ बुलाया तो वोह मेरे पास आए और मुझ से पूछा : तुम कौन हो और येह फ़ौत शुदा शख़्स कौन है ? मैं ने सारा

वाक़िआ़ सुनाया तो वोह वहीं रुक गए और उस शख़्स को समुन्दर के पानी से ग़ुस्ल दिया और उसे वोह कफ़न पहनाया जो उन के पास था फिर मुझे उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने को कहा तो मैं ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, फिर हम ने उस नेक शख़्स को उसी ख़ैमे (Camp) में दफ़्न कर दिया। उन नूरानी चेहरों वाले बुज़ुर्गों का क़ाफ़िला रवाना हो गया, मैं वहीं अकेला रह गया, रात हो चुकी थी लेकिन मेरा वहां से जाने को दिल नहीं चाह रहा था, मुझे उस साबिरो शाकिर बुज़ुर्ग से महब्बत हो गई थी, मैं उन की क़ब्र के पास ही बैठ गया, कुछ देर बा'द नींद आ गई तो मैं ने ख़्वाब में एक नूरानी मन्ज़र देखा कि मैं और वोह शख़्स एक सब्ज़ क़ुब्बे में मौजूद हैं और वोह सब्ज़ लिबास पहने खड़े हो कर क़ुरआने करीम की तिलावत कर रहा है। मैं ने उस से पूछा : क्या तू मेरा वोही दोस्त नहीं जिस पर मुसीबतें टूट पड़ी थीं और वोह इन्तिक़ाल कर गया था ? उस ने मुस्कुराते हुए कहा : हां ! मैं वोही हूं। फिर मैं ने पूछा : तुम्हें येह अ़ज़ीमुश्शान मर्तबा कैसे मिला और तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला पेश आया ? येह सुन कर वोह कहने लगा : اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मुझे मेरे रब ने उन लोगों के साथ जन्नत में मक़ाम अ़ता फ़रमाया है जो मुसीबतों पर सब्र करते हैं और जब उन्हें कोई ख़ुशी पहुंचती है तो शुक्र अदा करते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने जब से उस बुज़ुर्ग से येह वाक़िआ़ सुना है तब से मैं मुसीबत वालों से बहुत ज़ियादा महब्बत करने लगा हूं। (عیون الحکایات، 1/149)

अल्लाह करीम की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक की त़रफ़ से आई हुई आज़्माइशों पर शुरूअ़ ही से सब्र करना **बहुत बड़ी इबादत** है और इस की तौफ़ीक़ ख़ुश नसीबों ही को मिला करती है, हम **अल्लाह** पाक के कमज़ोर बन्दे हैं, हम उस से आज़्माइशों का नहीं बल्कि हर मुआ़मले में आ़फ़िय्यत, आ़फ़िय्यत और बस आ़फ़िय्यत ही का सुवाल करते हैं, मुसीबत में कपड़े फाड़ना, सर और मुंह पर हाथ मारना, सीना पीटना, चीख़ना चिल्लाना येह तमाम बातें ह़राम हैं।

(फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन, स. 321, मक्तबतुल मदीना)

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी हर क़दम पर मुआ़वनत फ़रमा
सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"सब्र" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) तुम्हारे ना पसन्दीदा बात पर सब्र करने में ख़ैरे कसीर (या'नी बड़ी भलाई) है। (المسند للامام احمد بن حنبل، ۱/۶۵۹، حدیث:۲۸۰۴)

(2) **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : जब मैं अपने किसी बन्दे को उस के जिस्म, माल या औलाद के ज़रीए आज़्माइश में मुब्तला करूं, फिर वोह सब्रे जमील के साथ उस का इस्तिक़्बाल करे तो क़ियामत के दिन मुझे ह़या आएगी कि उस के लिये मीज़ान क़ाइम करूं या उस का नामए आ'माल खोलूं।

(نوادر الاصول، الاصل الخامس والثمانون والمائة، ج۲، ص۷۰۰، حدیث:۹۶۳)

(3) **अल्लाह** पाक फ़रमाता है : "जब मैं अपने मोमिन बन्दे से उस की कोई दुन्यवी पसन्दीदा चीज़ ले लूं, फिर वोह सब्र करे तो मेरे पास उस की जज़ा जन्नत के सिवा कुछ नहीं।" (بخاری، 4/225، حدیث:6424)

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : येह ह़दीस हर प्यारी चीज़ को आ़म है, मां बाप बीवी औलाद ह़त्ता कि फ़ौत शुदा तन्दुरुस्ती वग़ैरा जिस पर भी सब्र करेगा اِنۡ شَآءَاللّٰہ जन्नत पाएगा। लिहाज़ा येह ह़दीस बड़ी बिशारत की है। (मिरआत, 2/505)

मुश्किलों में दे सब्र की तौफ़ीक़ अपने ग़म में फ़क़त़ घुला या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 80)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सब्र व नमाज़ से मदद चाहो

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अल्लाह पाक ने क़ुरआने करीम में 70 से ज़ाइद मरतबा "**सब्र**" का ज़िक्र फ़रमाया है, **दा'वते इस्लामी** के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान मआ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 17 पर पारह 1 **सूरतुल बक़रह** की आयत 45 में इर्शाद होता है :

وَاسۡتَعِیۡنُوۡا بِالصَّبۡرِ وَالصَّلٰوۃِ ؕ وَ اِنَّہَا لَکَبِیۡرَۃٌ اِلَّا عَلَی الۡخٰشِعِیۡنَ ۙ﴿۴۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो और बेशक नमाज़ ज़रूर भारी है मगर उन पर जो दिल से मेरी त़रफ़ झुकते हैं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी अपनी ह़ाजतों में सब्र और **नमाज़** से मदद चाहो (मज़ीद फ़रमाते हैं :) इस आयत में मुसीबत के वक़्त **नमाज़** के साथ इस्तिआ़नत (या'नी मदद चाहने) की ता'लीम भी फ़रमाई, क्यूं कि वोह इ़बादते बदनिय्या व

नफ़्सानिय्या की जामेअ़ है और उस में कुर्बे इलाही ह़ासिल होता है। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अहम उमूर के पेश आने पर मश्ग़ूले नमाज़ हो जाते थे, इस आयत में येह भी बताया गया कि मोमिनीने सादिक़ीन (या'नी सच्चे मुसल्मानों) के सिवा औरों पर **नमाज़** गिरां (या'नी भारी) है।

(ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 17)

सब्र की ता'रीफ़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सब्र के मा'ना हैं **: "रोकना"** । इस्तिलाह़ में काम्याबी की उम्मीद से मुसीबत पर बे क़रार न होने को सब्र कहते हैं। (तफ़्सीरे नई़मी, जि. 1, स. 299) और सब्रे जमील येह है कि मुसीबत वाला दूसरों में पहचाना न जाए और इस तक लम्बे अ़र्से तक बहुत ज़ियादा इबादतो रियाज़त कर के पहुंचा जा सकता है।

(लुबाबुल एह़्या, स. 308, मक्तबतुल मदीना)

सब्र पैदा करने का त़रीक़ा

हुज्जतुल इस्लाम **ह़ज़रते** सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं **:** मुसीबत की शुरूआ़त में सब्रो तह़म्मुल एक मुश्किल काम है और पहले सदमे के वक़्त नफ़्स पर क़ाबू रखना बहुत मुश्किल है, ऐसे वक़्त में अपने नफ़्स से यूं कहो **:** ऐ नफ़्स ! येह मुसीबत तो सर पर पड़ चुकी है इसे दूर करने की अब सूरत और तदबीर नहीं और **अल्लाह** पाक इस से भी बड़ी बड़ी मुसीबतों से तुझे नजात दे चुका है क्यूं कि आफ़तें और बलाएं कई त़रह़ की होती हैं। इस मुसीबत और तक्लीफ़ को भी **अल्लाह** पाक दूर फ़रमा

देगा तो ऐ नफ़्स ! थोड़ी देर सब्र के दामन को मज़बूती से पकड़े रख, तुझे इस के बदले हमेशा की ख़ुशी और बहुत बड़ा सवाब अ़ता होगा। और ह़क़ीक़त येह है कि सब्रो तह़म्मुल के साथ कोई मुसीबत नहीं रहती पस तुम अपनी ज़बान को ''اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ'' कहने और दिल को उस शै की याद में लगा दो जिस की बदौलत तुम्हें बारगाहे इलाही से अज्र ह़ासिल हो और मज़बूत़ इरादे वाले ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए इज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का बड़े बड़े मसाइब पर सब्र करना याद रखो।

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه कुछ आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : जब तुम देखो कि **अल्लाह** पाक तुम से दुन्या रोक रहा है या फिर तुम पर मसाइबो आलाम बढ़ा रहा है तो यक़ीन कर लो कि तुम **अल्लाह** पाक के हां इ़ज़्ज़त और बुलन्द मक़ाम वाले हो और वोह तुम्हें अपने दोस्तों के त़रीक़े पर चला रहा है, बेशक तुम उस की नज़रे रह़मत में हो।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 302, मक्तबतुल मदीना)

बना दो सब्रो रिज़ा का पैकर बनूं ख़ुश अख़्लाक़ ऐसा सरवर
रहे सदा नर्म ही तबीअ़त नबिय्ये रह़मत शफ़ीए़ उम्मत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब्र की अक़्साम और हुक्म

(1) शरीअ़त ने जिन कामों से मन्अ़ किया है उन से सब्र (या'नी रुकना) **फ़र्ज़** है।

(2) ना पसन्दीदा काम (जो शर्अ़न गुनाह न हो उस) से सब्र **मुस्तह़ब** है।

☆ तक्लीफ़ देह काम जो शर्अ़न मन्अ़ है उस पर सब्र (या'नी ख़ामोशी)

मन्अ़ है। मसलन किसी शख़्स या उस के बेटे का हाथ नाह़क़ काटा जाए तो उस शख़्स का ख़ामोश रहना और सब्र करना मन्अ़ है, ऐसे ही जब कोई शख़्स बुरे इरादे से उस के घर वालों की त़रफ़ बढ़े तो उस की ग़ैरत भड़क उठे लेकिन ग़ैरत का इज़्हार न करे और घर वालों के साथ जो कुछ हो रहा है इस पर सब्र करे और क़ुदरत के बा वुजूद न रोके तो शरीअ़त ने इस सब्र को **ह़राम** क़रार दिया है। (اِحیاءالعلوم،۴/۲۰۶)

900 दरजात

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब्र तीन क़िस्म का होता है : (1) मुसीबत पर सब्र (2) त़ाअ़त (नेक काम) पर सब्र (3) **अल्लाह** पाक की ना फ़रमानी से सब्र। पस जिस ने मुसीबत पर सब्र किया **अल्लाह** पाक उस के लिये तीन सो दरजात लिखेगा और हर दरजे के दरमियान ज़मीनो आस्मान के दरमियान की मसाफ़त (या'नी फ़ासिला) है और जिस ने नेकियों पर सब्र किया **अल्लाह** पाक उस के लिये छे सो दरजात लिखेगा और हर दरजे के दरमियान सातवीं ज़मीन से ले कर मुन्तहाए अ़र्श (अ़र्श की इन्तिहा तक) का फ़ासिला है और जिस ने गुनाह से सब्र किया **अल्लाह** पाक उस के लिये नव सो दरजात लिखेगा और हर दरजे के दरमियान सातवीं ज़मीन से ले कर मुन्तहाए अ़र्श का दुगना फ़ासिला है।

(फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन, स. 418, मक्तबतुल मदीना)

कोई धुत्कारे या झाड़े बल्कि मारे सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से सब्र कर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

"सब्र" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से सब्र के बारे में 3 हिकायात

(1) रिज़ाए मौला अज़ हमा औला

सहाबी इब्ने सहाबी, जन्नती इब्ने जन्नती हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا का एक बेटा बीमार हो गया तो आप को इस क़दर ग़म हुवा कि बा'ज़ लोग येह कहने लगे : "हमें अन्देशा है कि इस लड़के के सबब इन के साथ कोई मुआ़मला न बन जाए।" फिर वोह लड़का फ़ौत हो गया । जब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا उस के जनाज़े के साथ जा रहे थे तो बड़े ख़ुश थे। आप से इस का सबब पूछा गया तो इर्शाद फ़रमाया : "मेरा ग़म सिर्फ़ उस पर शफ़्क़त की वज्ह से था और जब **अल्लाह** पाक का हुक्म आ गया तो हम इस पर राज़ी हो गए।" (احیاء العلوم، 172/5)

صَلُّوا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

(2) मुर्ग़, गधा और कुत्ता

हज़रते सय्यिदुना अबू उ़काशा मसरूक़ कूफ़ी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स जंगल में रहता था। उस के पास एक कुत्ता, एक गधा और एक मुर्ग़ था। मुर्ग़ घर वालों को नमाज़ के लिये जगाया करता था और गधे पर वोह पानी भर कर लाता और ख़ैमे वग़ैरा लादा करता और कुत्ता उन की पहरेदारी करता था। एक दिन लोमड़ी आई और मुर्ग़ को पकड़ कर ले गई, घर वालों को इस बात का बहुत दुख हुवा मगर वोह शख़्स नेक था तो उस ने कहा : "हो सकता है इसी में बेहतरी हो।" फिर एक दिन भेड़िया आया और गधे का पेट फाड़ कर उस को मार दिया इस

पर भी घर वाले रन्जीदा हुए मगर उस शख़्स ने कहा : ''मुम्किन है इसी में भलाई हो।'' फिर एक दिन कुत्ता भी मर गया तो उस शख़्स ने फिर भी येही कहा : ''मुम्किन है इसी में बेहतरी हो।'' अभी कुछ दिन ही गुज़रे थे कि एक सुब्ह़ उन्हें पता चला कि उन के अत़राफ़ में आबाद तमाम लोग क़ैद कर लिये गए हैं और सिर्फ़ इन का घर महफ़ूज़ रहा है। ह़ज़रते सय्यिदुना मसरूक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दीगर तमाम लोग कुत्तों, गधों और मुर्ग़ों की आवाज़ों की वज्ह से ही पकड़े गए। लिहाज़ा तक़्दीरे इलाही के मुत़ाबिक़ उन के ह़क़ में बेहतरी उन जानवरों की हलाकत में थी। (احیاء العلوم، 173/5) (इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस वाक़िए़ को बयान फ़रमा कर लिखते हैं : जो **अल्लाह** पाक के छुपे हुए फ़ज़्लो करम को जान लेता है वोह हर ह़ाल में उस के कामों पर राज़ी रहता है।)

मसाइब में कभी ह़र्फ़े शिकायत लब पे मत लाना

वोह कर के मुब्तला बन्दों को अपने आज़माता है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

(3) सब से बड़ा इबादत गुज़ार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक के ऐसे ऐसे साबिर बन्दे गुज़रे हैं जिन्हों ने मुसीबतों को इस त़रह़ गले लगाया कि **अल्लाह** पाक से उन के टलने की दुआ़ करने को भी मक़ामे तस्लीमो रिज़ा के ख़िलाफ़ जाना चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रमाया : मैं रूए ज़मीन के सब से बड़े आ़बिद (या'नी इबादत गुज़ार) को देखना चाहता हूं। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन आप عَلَيْهِ السَّلَام को एक ऐसे शख़्स के पास ले गए जिस

के हाथ पाउं जुज़ाम की वज्ह से गल कट कर जुदा हो चुके थे और वोह ज़बान से कह रहा था, **या अल्लाह** पाक ! तू ने जब तक चाहा इन आ'ज़ा से मुझे फ़ाएदा बख़्शा और जब चाहा ले लिये और मेरी उम्मीद सिर्फ़ अपनी ज़ात में बाक़ी रखी, ऐ मेरे पैदा करने वाले ! मेरा तो मक़्सूद बस तू ही तू है। ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : ऐ जिब्रईले अमीन ! मैं ने आप को नमाज़ी, रोज़ादार शख़्स दिखाने का कहा था। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया : इस मुसीबत में मुब्तला होने से क़ब्ल येह ऐसा ही था, अब मुझे येह हुक्म मिला है कि इस की आंखें भी ले लूं। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने इशारा किया और उस की आंखें निकल पड़ीं ! मगर आ़बिद ने ज़बान से वोही बात कही : ''**या अल्लाह** पाक ! जब तक तू ने चाहा इन आंखों से मुझे फ़ाएदा बख़्शा और जब चाहा इन्हें वापस ले लिया। ऐ **अल्लाह** पाक ! मेरी उम्मीद गाह सिर्फ़ अपनी ज़ात को रखा, मेरा तो मक़्सूद बस तू ही तू है।'' ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने आ़बिद से फ़रमाया : आओ हम तुम मिल कर दुआ़ करें कि **अल्लाह** पाक तुम को फिर आंखें और हाथ पाउं लौटा दे और तुम पहले ही की त़रह़ इबादत करने लगो। आ़बिद ने कहा : हरगिज़ नहीं। ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : आख़िर क्यूं नहीं ? आ़बिद ने जवाब दिया : जब मेरे **अल्लाह** पाक की रिज़ा इसी में है तो मुझे सिह़्ह़त नहीं चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : वाक़ेई मैं ने किसी और को इस से बढ़ कर आ़बिद नहीं देखा। ह़ज़रते

सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा : येह वोह रास्ता है कि रिज़ाए इलाही तक रसाई के लिये इस से बेहतर कोई राह नहीं । (روض الریاحین،ص١٥٥)

जे सोहना मेरे दुख विच राज़ी मैं सुख नूं चुल्हे पावां

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! साबिर हो तो ऐसा ! आख़िर कौन सी मुसीबत ऐसी थी जो उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वुजूद में न थी ह़त्ता कि बिल आख़िर आंखों के चराग़ भी बुझा दिये गए मगर उन के सब्रो इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ न आया, वोह **"राज़ी ब रिज़ाए इलाही"** की उस अ़ज़ीम मन्ज़िल पर फ़ाइज़ थे कि **अल्लाह** पाक से शिफ़ा त़लब करने के लिये भी तय्यार नहीं थे कि जब **अल्लाह** पाक ने बीमार करना मन्ज़ूर फ़रमाया है तो मैं तन्दुरुस्त होना नहीं चाहता ।

سُبْحٰنَ الله ! येह उन्हीं का ह़िस्सा था । ऐसे ही अहलुल्लाह का मक़ूला है : نَحنُ نَفْرَحُ بِالْبَلَاءِ كَمَا يَفْرَحُ اَهْلُ الدُّنْيَا بِالنِّعَمِ या'नी हम बलाओं और मुसीबतों के मिलने पर ऐसे ही ख़ुश होते हैं जैसे अहले दुन्या दुन्यवी ने'मतें हाथ आने पर ख़ुश होते हैं । **याद रहे !** मुसीबत बसा अवक़ात मोमिन के ह़क़ में रह़मत हुवा करती है और सब्र कर के अ़ज़ीम अज्र कमाने और बे ह़िसाब जन्नत में जाने का मौक़अ़ फ़राहम करती है ।

एक कांटे पर सब्र का अज्र

चुनान्चे सह़ाबी इब्ने सह़ाबी, जन्नती इब्ने जन्नती ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِىَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिस के माल या जान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे पोशीदा (या'नी छुपाए) रखा और लोगों पर ज़ाहिर न

किया तो **अल्लाह** पाक पर ह़क़ है कि उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दे । (مجمع الزوائد، ج۱۰ص۴۵۰حدیث۱۷۸۷۲) एक और रिवायत में है : मुसल्मान को मरज़, परेशानी, रन्ज, अज़िय्यत और ग़म में से जो मुसीबत पहुंचती है यहां तक कि कांटा भी चुभता है तो **अल्लाह** पाक उसे उस के गुनाहों का कफ़्फ़ारा बना देता है । (صحیح البخاری، ج۴ص۳حدیث۵۶۴۱)

हम आज़्माएंगे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक क़ुरआने करीम में पारह 2 सूरए बक़रह आयत 155 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़रूर हम तुम्हें आज़्माएंगे कुछ डर और भूक से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से और ख़ुश ख़बरी सुना उन सब्र वालों को ।

चुप कर सीं तां मोती मिल्सन, सब्र करे तां हीरे पागलां वांगों रोला पावें नां मोती नां हीरे

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

बिच्छू के काटने पर सब्र

सिल्सिलए अ़त्तारिय्या क़ादिरिय्या के अ़ज़ीम बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सरी सक़ती رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ से सब्र के बारे में पूछा गया तो आप ने सब्र से मुतअ़ल्लिक़ बयान शुरूअ़ फ़रमा दिया । इसी दौरान एक बिच्छू आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की टांग पर मुसल्सल डंक मारता रहा लेकिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पुर सुकून रहे । आप से पूछा गया कि इस मूज़ी (या'नी तक्लीफ़ देने वाले) को हटाया क्यूं नहीं ? फ़रमाया : मुझे **अल्लाह** पाक से ह़या आ रही थी कि मैं सब्र का बयान करूं लेकिन ख़ुद सब्र न करूं । (احیاء العلوم، ۴/۲۱۵)

सब्र करने वालों के सरदार

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَیْہِ السَّلَام क़ियामत के दिन सब्र करने वालों के सरदार होंगे। (ابن عساکر، ذکر من اسمہ: ایوب، ایوب نبیّ اللّٰہ، ۱۰/۶۶)

रिज़्क़ के मुआ़मले में सब्र

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ अपनी मुबारक ज़िन्दगी की सब से आख़िरी किताब **"मिन्हाजुल आ़बिदीन"** में फ़रमाते हैं : (**अल्लाह** पाक की इ़बादत से रोकने में मख़्लूक़ के लिये) सब से बड़ी रुकावट **"रिज़्क़"** है लोगों ने इस के लिये अपनी जानों को थका दिया, इस की फ़िक्र में दिल इस क़दर पड़ गए कि अपनी उ़म्रें ज़ाएअ़ कर दीं और इस की वज्ह से बड़े बड़े गुनाह करने से भी बाज़ न आए, रिज़्क़ की फ़िक्र ने मख़्लूक़ को **अल्लाह** पाक और उस की इ़बादत से दूर कर के दुन्या और मख़्लूक़ की ख़िदमत में लगा दिया है लिहाज़ा दुन्या में इन्हों ने ग़फ़्लत, नुक़्सान और ज़िल्लतो रुस्वाई में ज़िन्दगी गुज़ारी और आख़िरत की त़रफ़ ख़ाली हाथ चल पड़े (हैं), अगर **अल्लाह** पाक ने अपने फ़ज़्ल से रह़्म न फ़रमाया तो वहां इन्हें ह़िसाब और अ़ज़ाब का सामना होगा। ग़ौर तो करो कि **अल्लाह** पाक ने रिज़्क़ के मुतअ़ल्लिक़ कितनी आयात नाज़िल फ़रमाईं और रिज़्क़ देने पर कितना ज़ियादा अपने वा'दे, क़सम और ज़मानत का ज़िक्र फ़रमाया, इस सब के बा वुजूद लोगों ने नेकी का रास्ता इख़्तियार न किया और न ही मुत्मइन हुए बल्कि वोह रिज़्क़ की वज्ह से मदहोशी की कैफ़िय्यत में हैं और इन्हें येही फ़िक्र खाए जाती है कि कहीं सुब्ह़ या रात का खाना निकल न जाए।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू), स. 277, मुलख़्ख़सन तस्हीलन)

है सब्र तो ख़ज़ानए फ़िरदौस भाइयो ! शिक्वा न आ़शिक़ों की ज़बानों पे आ सके

सब्र का आ'ला तरीन दरजा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सब्र का आ'ला तरीन दरजा येह है कि लोगों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तकालीफ़ पर सब्र किया जाए। **अल्लाह** पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो तुम से क़त़्ए तअ़ल्लुक़ करे उस से सिलए रेह़मी से पेश आओ, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ करो।" और ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं तुम से कहता हूं कि बुराई का बदला बुराई से न दो।" (احیاء العلوم، ۴/۲۱۵ ملخصاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सब्र एक कड़वी दवा और ना पसन्दीदा घूंट है मगर है बहुत बरकत वाली शै, येह फ़ाएदे वाली चीज़ों को लाती और नुक़्सान देह चीज़ों को तुम से दूर करती है और जब दवा ऐसी बेहतरीन हो तो अ़क़्ल मन्द इन्सान ख़ुद पर ज़बर दस्ती कर के इसे पी लेता और इस की कड़वाहट को बरदाश्त करता और कहता है : कड़वाहट एक लम्हे की और राह़त साल भर की है। (इसी त़रह़) जब **अल्लाह** पाक किसी वक़्त तुम से दुन्या या रिज़्क़ को रोक दे तो तुम कहो : ऐ नफ़्स ! **अल्लाह** पाक तेरे ह़ाल को तुझ से ज़ियादा जानता है और वोह तुझ पर सब से ज़ियादा मेहरबान भी है, जब वोह कुत्ते को घटिया होने के बा वुजूद रोज़ी देता है बल्कि काफ़िर को अपना दुश्मन होने के बा वुजूद खिलाता है तो मैं तो उस का बन्दा, उसे पहचानने और एक मानने वाला हूं तो क्या वोह मुझे एक रोटी भी नहीं दे सकता ? **ऐ नफ़्स !** अच्छी त़रह़ जान ले कि उस ने तुझ से रिज़्क़ किसी बड़े फ़ाएदे के लिये ही रोका है और अ़न्क़रीब **अल्लाह** पाक तंगी के बा'द आसानी फ़रमाएगा पस थोड़ा सब्र कर ले फिर तू उस की आ़लीशान क़ुदरत के अ़जाइबात देखेगा।

वोह कि आफ़ात में मुब्तला हैं जो गिरिफ़्तारे रन्जो बला हैं
फ़ज़्ल से उन को सब्रो रिज़ा की मेरे मौला तू ख़ैरात दे दे
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मौत की दुआ करना कैसा ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ लोग मुसीबत सर पर आ जाने पर मौत की दुआ मांगने लगते हैं बल्कि बा'ज़ नादान क़र्ज़दार के बार बार तक़ाज़ा करने या दुन्यावी ता'लीम हासिल करने वाला त़ालिबे इल्म इम्तिहान में फ़ेल हो जाने या बिज़्नस में बहुत बड़ा नुक़्सान हो जाने या पसन्द की जगह पर शादी न होने पर ख़ुदकुशी कर लेते हैं। हरगिज़ कभी भी इस गुनाह की त़रफ़ न जाइये, याद रखिये ! ख़ुदकुशी गुनाहे कबीरा, ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। ख़ुदकुशी करने वाले शायद येह समझते हैं कि हमारी जान छूट जाएगी ! ह़ालां कि इस से जान छूटने के बजाए नाराज़िये रब्बुल इ़ज़्ज़त की सूरत में निहायत बुरी त़रह़ फंस जाती है। ख़ुदा की क़सम ! ख़ुदकुशी का अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा । रिज़ाए इलाही पर राज़ी रहिये सब्र कीजिये और अज्र कमाइये। **और हां !** रन्जो मुसीबत से घबरा कर मौत की तमन्ना करना मम्नूअ़ है । हां शौक़े वस्ले इलाही (या'नी **अल्लाह** पाक से मुलाक़ात) सालिह़ीन (या'नी नेक बन्दों) से मिलने के इश्तियाक़ (या'नी शौक़) दीनी नुक़्सान या फ़ितने में पड़ने के ख़ौफ़ से मौत की तमन्ना करना जाइज़ है।

मौत की दुआ कब कर सकते हैं ?

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब दीन में फ़ितना देखे तो अपने मरने की दुआ जाइज़ है। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 182, मक्तबतुल मदीना)

''बहारे शरीअ़त'' के मुसन्निफ़, ह़ज़रते मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मरने की आरज़ू करना और इस की दुआ़ मांगना मक्रूह है, जब कि किसी दुन्यवी तक्लीफ़ की वज्ह से हो, मसलन तंगी से बसरे अवक़ात होती है या दुश्मन का अन्देशा है माल जाने का ख़ौफ़ है और अगर येह बातें न हों बल्कि लोगों की ह़ालतें ख़राब हो गईं मा'सियत में मुब्तला हैं, इसे भी अन्देशा है कि गुनाह में पड़ जाएगा तो आरज़ूए मौत मक्रूह नहीं। (बहारे शरीअ़त, 3/658) ह़दीसे पाक में है : तुम में से कोई मौत की आरज़ू न करे मगर जब कि नेकी करने पर ए'तिमाद न रखता हो। हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्क़ूल है : اِذَا اَرَدْتَّ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَاقْبِضْنِیْ اِلَیْكَ غَیْرَ مَفْتُوْنٍ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! जब तू किसी क़ौम के साथ अ़ज़ाब व गुमराही का इरादा फ़रमाए तो (उन के बुरे आ'माल के सबब) मुझे बिग़ैर फ़ितने के अपनी त़रफ़ उठा।

(سنن الترمذی، الحدیث: ۳۲۴۶، ج۵، ص۱۶۱)

अल्लाह ! इस से पहले ईमां पे मौत दे दे *नुक़्सां मेरे सबब से हो सुन्नते नबी का*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	एक कांटे पर सब्र का अज्र	14
साबिरो शाकिर बूढ़ा	1	सब्र करने वालों के सरदार	16
सब्र व नमाज़ से मदद चाहो	7	सब्र का आ'ला तरीन दरजा	17
सब्र की अक़्साम और ह़ुक्म	9	मौत की दुआ़ करना कैसा ?	18
सब से बड़ा इ़बादत गुज़ार	12	☆☆☆	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

राहे ख़ुदा में
सर दर्द पर सब्र की फ़ज़ीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अल्लाह पाक की राह में सर दर्द में मुब्तला हो फिर उस पर सब्र करे तो उस के पिछले गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे।

(مسند البزار، ج۶، ص413، حدیث:2437)

978-969-722-116-5
01013111

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net